

# आसान हिन्दी तरजुमा

हाफिज़ नज़र अहमद



Written in Hindi by  
a team of  
[www.understandquran.com](http://www.understandquran.com)

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY

Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858

Hyderabad, India

# आसान तरजुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफिज़ नज़र अहमद

प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी

★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी

मुदीर मुजल्ला “अहले हदीस”, लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰

(अरबी - इस्लामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी

मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰

फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इस्लामियात)

★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक

ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी

ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

## अल्हम्दुलिल्लाह

“आसान तरजुमा कुरआन मजीद” कई एतिबार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तरजुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाकिफ़ भी चन्द पारे पड़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

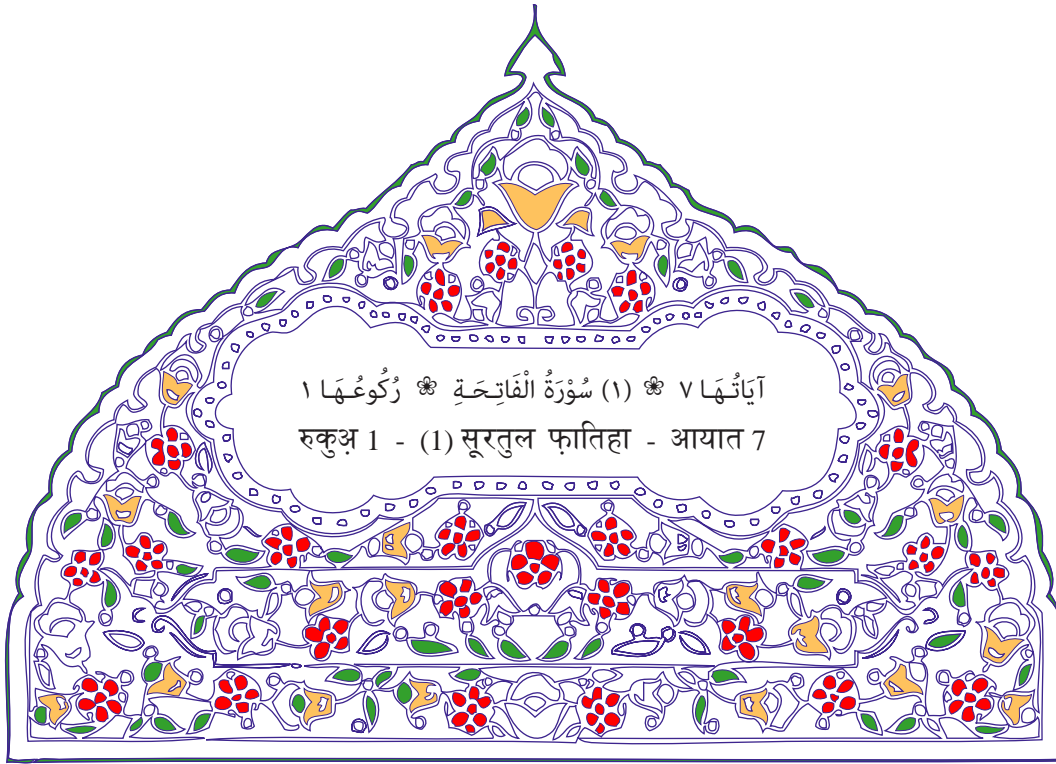
ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को वा बरकत और वाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल विल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिए फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफिज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज़्री

3 दिसम्बर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह



अल्लाह के नाम से जो बहुत  
मेहरबान, रहम करने वाला  
है। (1)

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं  
जो तमाम जहानों का रब है, (2)

बहुत मेहरबान, रहम करने वाला  
है। (3)

वदले के दिन का मालिक है, (4)

हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं  
और सिर्फ तुझ ही से मदद चाहते  
हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत  
दे, (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू  
ने इन्आम किया न उन का जिन  
पर ग़ज़ब किया गया, और न  
उन का जो गुमराह हुए। (7)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٢ الرَّحْمَنِ

الرَّحِيمِ ٣ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ

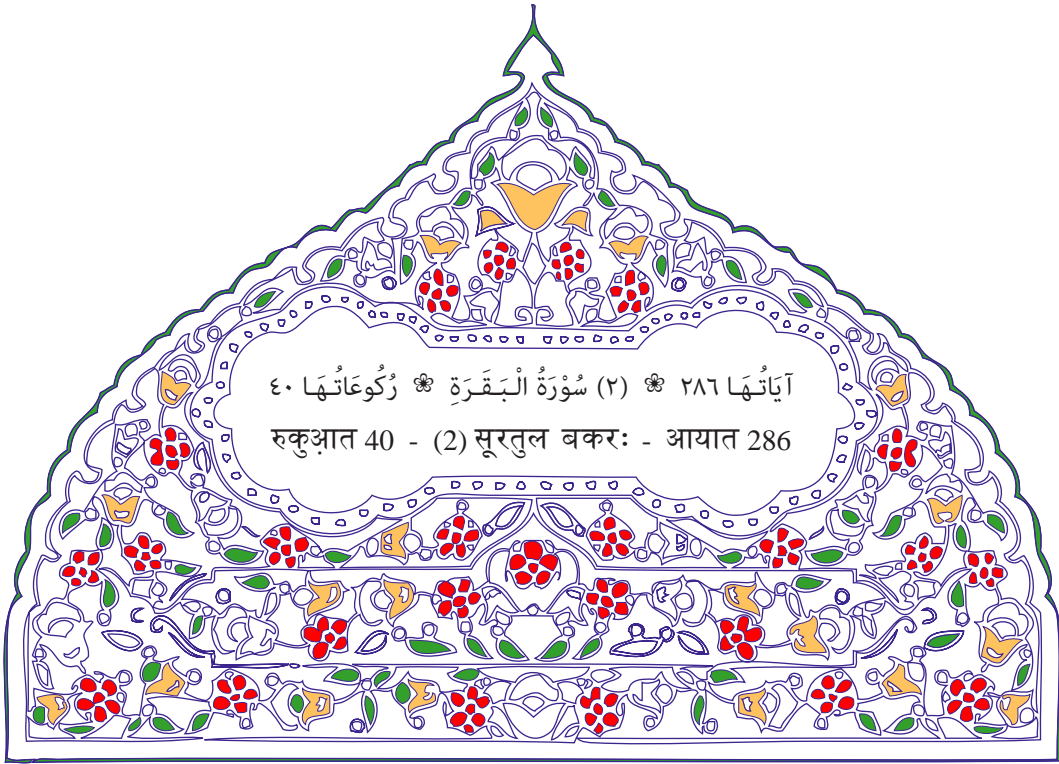
وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ٥ اهْدِنَا الصِّرَاطَ

الْمُسْتَقِيمَ ٦ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ٧

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ٧

المنزل ١

ع ١



## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है।

रहम करने वाला बहुत मेहरबान अल्लाह नाम से

الْم ﴿١﴾ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۚ فِيهِ ۚ هُدًى

अलिफ-लाम-मीम, (1)

हिदायत इस में नहीं शक किताब यह 1 अलिफ-लाम-मीम

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत है, (2)

لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर ईमान लाते हैं जो लोग 2 परहेज़गारों के लिए

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और काइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से खर्च करते हैं, (3)

وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾

3 वह खर्च करते हैं हम ने उन्हें दिया और उस से जो नमाज़ और काइम करते हैं

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا

और जो ईमान रखते हैं जो आप पर नाज़िल किया गया, और जो आप से पहले नाज़िल किया गया और वह आखिरत पर यकीन रखते हैं। (4)

أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾

4 यकीन रखते हैं वह और आखिरत पर आप से पहले से नाज़िल किया गया

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, उन पर बराबर है आप उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर सुहर लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं॥ (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते॥ (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं॥ (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, तो कहते हैं, हम सिर्फ़ इसलाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो वेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए, तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए? सुन रखो खुद वही बेवकूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

5	कामयाब	वह	और वही लोग	अपना रब	से	हिदायत	पर	वही लोग
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ								
डराएं उन्हें	न	या	ख़्वाह आप उन्हें डराएं	उन पर	बराबर	कुफ़ किया	जिन लोगों ने	वेशक
لَا يُؤْمِنُونَ ۖ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ								
और पर	उन के कान	और पर	उन के दिल	पर	अल्लाह	सुहर लगा दी	6	ईमान लाएंगे
أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ وَمِنَ النَّاسِ								
लोग	और से	7	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	पर्दा	उन की आँखें	
مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ۚ								
8	ईमाने वाले	वह	और नहीं	आखिरत	और दिन पर	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कहते हैं
يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالدِّينَ آمِنُوا ۚ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ								
अपने आप	मगर	धोका देते	और नहीं	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	वह धोका देते हैं	
وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۚ								
बीमारी	अल्लाह	सो बढ़ा दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	9	समझते हैं	और नहीं
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۚ وَإِذَا قِيلَ								
कहा जाता है	और जब	10	वह झूट बोलते हैं	क्योंकि	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	
لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۚ								
11	इस्लाह करने वाले	हम	सिर्फ़	वह कहते हैं	ज़मीन में	न फ़साद फैलाओ	उन्हें	
إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ۚ وَإِذَا								
और जब	12	वह नहीं समझते	और लेकिन	फ़साद करने वाले	वही	वेशक वह	सुन रखो	
قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ								
ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएं	वह कहते हैं	लोग	ईमान लाए	जैसे	तुम ईमान लाओ	उन्हें कहा जाता है
السُّفَهَاءُ ۚ إِنَّمَا هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ								
13	वह जानते	नहीं	और लेकिन	बेवकूफ़	वही	खुद वह	सुन रखो	बेवकूफ़
وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ								
पास	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	और जब मिलते हैं	
شَيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ ۖ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ۚ								
14	मज़ाक़ करते हैं	हम	महज़	तम्हारे साथ	हम	कहते हैं	अपने शैतान	
اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمْدُدُّهُمُ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ								
15	अन्धे हो रहे हैं	उन की सरकशी में	और बढ़ाता है उन को	उन से	मज़ाक़ करता है	अल्लाह		

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبَحَتُ تَبَارَتْهُمْ						
यही लोग	जिन्होंने ने	मोल ली	गुमराही	हिदायत के बदले	तो न फाइदा दिया	उन की तिजारात
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْفَدَ نَارًا ۚ						
और न थे	वह हिदायत पाने वाले	16	उन की मिसाल	जैसे मिसाल	वह जिस ने	आग भड़काई
فَلَمَّا أَصَاعَتْ مَا حَوْلَهُ خَبَّ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي						
फिर जब	रौशन कर दिया	उस का इर्द गिर्द	छीन ली	अल्लाह	उन की रौशनी	और उन्हें छोड़ दिया
ظُلُمٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّ بَكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾						
अन्धेरे	वह नहीं देखते	17	वहरे	गूँगे	अन्धे	सो वह नहीं लौटेंगे
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَّرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ						
या	जैसे वारिश	से	आस्मान	उस में	अन्धेरे	और गरज और और बिजली की चमक
أَصَابِعُهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُحِيطٌ						
अपनी उनगलियाँ	में	अपने कान	सबब	कड़क (बिजली)	डर	मौत और अल्लाह
بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَصَاءَ لَهُمْ						
काफ़िरों को	19	क़रीब है	बिजली	उचक ले	उन की निगाहें	जब भी वह चमकी
مَشَوْا فِيهِ ۖ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ						
चल पड़े	उस में	और जब	अन्धेरा हुआ	उन पर	वह खड़े हुए	और अगर अल्लाह चाहता
بِسْمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾						
उन की शुनवाई	और उन की आँखें	वेशक	अल्लाह	पर	हर चीज़	कादिर
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ						
ऐ	लोगो	तुम इबादत करो	अपने रब	जिस ने	तुम्हें पैदा किया	और वह लोग जो से तुम से पहले
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ						
ताकि तुम	परहेज़गार हो जाओ	21	जिस ने	बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन फ़र्श और आस्मान छत
وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا ۖ لَّكُمْ						
और उस ने उतारा	से	आस्मान	पानी	फिर निकाला	उस के ज़रीए	से फल (जमा) रिज़क़ तुम्हारे लिए
فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ						
सो न	ठहराओ	अल्लाह के लिए	कोई शरीक	और तुम	जानते हो	22 और अगर तुम हो में शक
مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا						
से जो	हम ने उतारा	पर	अपना बन्दा	तो ले आओ	एक सूरत	से इस जैसी और बुला लो
شُهَدَاءَكُمْ ۚ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾						
अपने मददगार	से	सिवा	अल्लाह	अगर	तुम हो	सच्चे

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारात ने कोई फाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह वहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से वारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियाँ ठोस लेते हैं कड़क के सबब मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है। (19)

क़रीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़क़, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)



फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर है, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (24)

और उन लोगों को खुशख़बरी दो जो ईमान लाए, और उन्होंने ने नेक अमल किए उन के लिए बागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा, वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में वीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। (25)

वेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो ख़्वाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है, और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और उस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, (26)

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़्रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें, और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (27)

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़ करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें ज़िलाएगा, फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। (28)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़सद किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (29)

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا						
उस का ईंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर
النَّاسِ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا						
ईमान लाए	जो लोग	और खुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	इन्सान और पत्थर
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا						
जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बागात	उन के लिए कि नेक और उन्होंने ने अमल किए
رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۖ قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ						
पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़्क कोई फल से उस से खाने को दिया जाएगा
وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا						
उस में	और वह	पाकीज़ा	वीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता उस से हालांकि उन्हें दिया गया
خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا						
ख़्वाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता अल्लाह वेशक 25 हमेशा रहेंगे
فَوْقَهَا ۗ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ						
उन का रब	से	हक़	कि वह	वह जानते हैं	ईमान लाए	सो जो लोग उस से ऊपर
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ يُضِلُّ						
वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	अल्लाह	इरादा किया	क्या	वह कहते हैं कुफ़ किया और जिन लोगों ने
بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾						
26	नाफ़रमान	मगर	इस से	और नहीं गुमराह करता	बहुत लोग	इस से और हिदायत देता है बहुत लोग
الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ ۚ وَيَقْطَعُونَ						
और काटते हैं	पुख़्ता इक़्रार	से बाद	अल्लाह	वादा	तोड़ते हैं	जो लोग
مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسَدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ						
वही लोग	ज़मीन	में	और वह फ़साद फैलाते हैं	वह जोड़े रखें	कि	उस से अल्लाह जिस का हुक्म दिया
هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا						
बेजान	और तुम थे	अल्लाह का	तुम कुफ़ करते हो	किस तरह	27	नुक्सान उठाने वाले वह
فَاحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾						
28	तुम लौटाए जाओगे	उस की तरफ़	फिर	तुम्हें ज़िलाएगा	फिर	तुम्हें मारेगा फिर तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी
هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَىٰ						
तरफ़	क़सद किया	फिर	सब	ज़मीन	में जो	तुम्हारे लिए पैदा किया जिस ने वह
السَّمَاءِ فَسَوَّيْنَهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾						
29	जानने वाला	चीज़	हर	और वह	आस्मान	सात फिर उन को ठीक बना दिया आस्मान

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ۗ قَالُوْۤا									
और जब	कहा	तुम्हारा रब	फ़रिश्तों से	कि मैं	बनाने वाला	में	ज़मीन	एक नाइब	उन्होंने ने कहा
اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَیَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ									
क्या तू बनाएगा	उस में	जो	फ़साद करेगा	उस में	और बहाएगा	खून	और हम	वे ऐव कहते हैं	
بِحَمْدِكَ ۚ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۗ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۰ وَعَلَّمَ									
तेरी तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी	उस ने कहा	वेशक मैं	जानता हूँ	जो	तुम नहीं जानते	30	और सिखाए
اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلٰی الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْبِئُوْنِیْ									
आदम (अ)	नाम	सब चीज़ों	फिर	उन्हें सामने किया	पर	फ़रिश्ते	फिर कहा	मुझ को बतलाओ	
بِاسْمَآءٍ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝۳۱ قَالُوْۤا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا									
नाम	उन	अगर	तुम हो	सच्चे	31	उन्होंने ने कहा	तू पाक है	इल्म नहीं	हमें
اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۗ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝۳۲ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ									
मगर	जो	तू ने हमें सिखाया	वेशक तू	तू	जानने वाला	हिक्मत वाला	32	उस ने फ़र्माया	ऐ आदम
بِاسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ									
उन के नाम	सो जब	उस ने उन्हें बतलाए	उन के नाम	उस ने फ़र्माया	क्या नहीं	मैं ने कहा	तुम्हें	कि मैं	जानता हूँ
غَیْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝۳۳									
छुपी हुई बातें	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और मैं जानता हूँ	जो	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	तुम	छुपाते हो	33
وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْۤا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ۗ اَبٰی									
और जब	हम ने कहा	फ़रिश्तों को	तुम सज्दः करो	आदम को	तो उन्होंने ने सज्दः किया	सिवाए	इब्लीस	उस ने इन्कार किया	
وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝۳۴ وَقُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ									
और तक्बुर किया	और हो गया	से	काफ़िर	34	और हम ने कहा	ऐ आदम	तुम रहो	तुम	
وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۚ وَلَا تَقْرَبَا									
और तुम्हारी बीवी	जन्नत	और तुम दोनों खाओ	उस से	इत्मिनान से	जहां	तुम चाहो	और न	करीब जाना	
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝۳۵ فَازْلٰهُمَا الشَّیْطٰنُ									
इस	दरख़्त	फिर तुम हो जाओगे	से	ज़ालिम (जमा)	35	फिर उन दोनों को फुसलाया	शैतान		
عَنْهَا فَاٰخَرٰهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۚ وَقُلْنَا اهْبِطُوْۤا بَعْضُكُمْ									
उस से	फिर उन्हें निकलवा दिया	से जो	वह थे	उस में	और हम ने कहा	तुम उतर जाओ	तुम्हारे बाज़		
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ۝۳۶ فَتَلَقٰی									
बाज़ के	दुश्मन	और तुम्हारे लिए	में	ज़मीन	ठिकाना	और सामान	तक	वक़्त	36
اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهِ كَلِمَتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ۗ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝۳۷									
आदम	से	अपना रब	कुछ कलिमात	फिर उस ने तौबा कुबूल की	उस की	वेशक वह	वह	तौबा कुबूल करने वाला	37

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्होंने ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और खून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को वे ऐव कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा वेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्होंने ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, वेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़र्माया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़र्माया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की, और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सज्दः करो तो इब्लीस के सिवाए उन्होंने ने सज्दः किया, उस ने इन्कार किया, और तक्बुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीवी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न करीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस जगह से जहां वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के लिए दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है, और एक वक़्त तक सामाने (जिन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा कुबूल की, वेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)



हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई खौफ होगा, न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! मेरी नेमत याद करो, जो मैं ने तुम्हें बख़शी, और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुमहारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी कीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को वातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम काइम करो नमाज़, और अदा करो ज़कात, और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ, (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालाँकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब् र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर आज़िज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के ख़बर होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़शी, और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख्स किसी का कुछ बदला न वनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआवज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ									
हम ने कहा	तुम उतर जाओ	यहां से	सब	पस जब	तुम्हें पहुँचे	मेरी तरफ़ से	कोई हिदायत	सो जो	चला
هُدًى فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا									
मेरी हिदायत	तो न	कोई खौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे	38	और जिन लोगों ने	कुफ़ किया
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾									
और झुटलाया	हमारी आयात	वही	दोज़ख़ वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	39		
يَبْنِي ۖ إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا									
ऐ औलाद	याकूब	तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम्हें	और पूरा करो		
بِعَهْدِي ۖ أُوفِ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونَ ﴿٤٠﴾ وَإِمْنُوا بِمَا									
मेरा अ़हद	मैं पूरा करूँगा	तुम्हारा अ़हद	और मुझ ही से	डरो	40	और तुम ईमान लाओ	उस पर जो		
أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۚ وَلَا تَشْتَرُوا									
मैं ने नाज़िल किया	तसदीक़ करने वाला	उस की जो	तुम्हारे पास	और न	हो जाओ	पहले	काफ़िर	उस के	और न
بِآيَتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ									
मेरी आयात	कीमत	थोड़ी	और मुझ ही से	डरो	41	और न	मिलाओ	हक़	वातिल से
وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ									
और न छुपाओ	हक़	जब कि तुम	जानते हो	42	और काइम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात	
وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ									
और रुकूअ़ करो	साथ	रुकूअ़ करने वाले	43	क्या तुम हुक्म देते हो	लोग	नेकी का	और तुम भूल जाते हो		
أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ									
अपने आप	हालाँकि तुम	पढ़ते हो	किताब	क्या फिर नहीं	तुम समझते	44	और तुम मदद हासिल करो	सब् र से	
وَالصَّلَاةَ ۚ وَاتَّهَا لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ									
और नमाज़	और वह	बड़ी (दुशवार)	मगर	पर	आज़िज़ी करने वाले	45	वह जो	समझते हैं	
أَنَّهُمْ مُّلَفُّوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾ يَبْنِي ۖ إِسْرَءِيلَ									
कि वह	ख़बर होने वाले	अपना रब	और यह कि वह	उस की तरफ़	लौटने वाले	46	ऐ औलादे	याकूब	
اِذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾									
तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम पर	और यह कि मैं ने	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	पर	ज़माने वाले	47
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ									
और डरो	उस दिन	न बदला वनेगा	कोई शख्स	से	किसी	कुछ	और न	कुबूल की जाएगी	
مِنْهَا شَفَاعَةً ۚ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾									
उस से	कोई सिफ़ारिश	और न	लिया जाएगा	उस से	कोई मुआवज़ा	और न	उन	मदद की जाएगी	48

9

और जब हम ने कहा तुम दाखिल होजाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफरागत खाओ और दरवाज़े से दाखिल हो सिज्द: करते हुए, और कहो वरुशदे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं वरुश देंगे, और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारा चश्मे, हर क़ौम ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क से, और ज़मीन में न फ़िसाद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सबर न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी, और गन्दुम, और मसूर, और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे, और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ								
और	हम ने	तुम दाखिल	उस	बस्ती	फिर खाओ	उस से	जहां	तुम चाहो
رَعَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ								
बाफरागत	और तुम दाखिल हो	दरवाज़ा	सिज्द: करते हुए	और कहो	वरुशदे	हम वरुश देंगे	तुम्हें	
خَطِيئَتِكُمْ ۖ وَسَنُزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا								
तुम्हारी ख़ताएं	और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे	नेकी करने वाले	58	फिर बदल डाला	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	बात		
غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا								
दूसरी	वह जो कि	कही गई	उन्हें	फिर हम ने उतारा	पर	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	अज़ाब	
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ								
से	आस्मान	क्योंकि	वह नाफ़रमानी करते थे	59	और जब	पानी मांगा	मूसा (अ)	अपनी क़ौम के लिए
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ								
फिर हम ने कहा	मारो	अपना अ़सा	पत्थर	तो फूट पड़े	उस से	बारा	चश्मे	
قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِّزْقِ اللَّهِ								
जान लिया	हर क़ौम	अपना घाट	तुम खाओ	और पियो	से	रिज़्क	अल्लाह	
وَلَا تَعَثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يُمُوسَىٰ								
और न फिरो	में	ज़मीन	फ़साद मचाते	60	और जब	तुम ने कहा	ऐ मूसा	
لَنْ نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا								
हरगिज़ न सबर करेंगे	पर	खाना	एक	दुआ करें	हमारे लिए	अपना रब	निकाले हमारे लिए	उस से जो
ثُنْبٍ ۚ وَالْأَرْضِ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَآئِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا								
उगाती है	ज़मीन	से (कुछ)	तरकारी	और ककड़ी	और गन्दुम	और मसूर		
وَبَصَلِهَا ۚ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۖ								
और प्याज़	उस ने कहा	क्या तुम बदलना चाहते हो	जो कि	वह अदना	उस से जो	वह	बेहतर	
إِهْبِطُوا مِصْرًا ۚ فَإِنَّ لَكُمْ مِمَّا سَأَلْتُمْ ۖ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدِّلَّةَ								
तुम उतरो	शहर	पस बेशक	तुम्हारे लिए	जो तुम मांगते हो	और डाल दी गई	उन पर	ज़िल्लत	
وَالْمَسْكَنَةَ وَبَآءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ								
और मोहताजी	और वह लौटे	ग़ज़ब के साथ	से	अल्लाह	यह	इस लिए कि वह		
كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ								
वह थे	वह इन्कार करते	आयतों का	अल्लाह	और क़त्ल करते थे	नबियों को			
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾								
नाहक़	यह	इस लिए कि	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	और थे	हद से बढ़ते	61		

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصْرَى وَالصَّبِيْنَ					
वेशक जो लोग	ईमान लाए	और जो लोग	यहूदी हुए	और नसारा	और सावी
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ					
जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और रोज़े	आखिरत	और अमल करे
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا					
पास	उन का रब	और न	कोई खौफ	उन पर	और न
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ					
तुम से इकरार	और हम ने उठाया	तुम्हारे ऊपर	कोहे तूर	पकड़ो	जो हम ने तुम्हें दिया
وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۚ					
और याद रखो	जो	उस में	ताकि तुम	परहेज़गार हो जाओ	63
فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٦٤﴾					
पस अगर न	फ़ज़ल	अल्लाह	तुम पर	और उस की रहमत	तो तुम थे
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ					
और अलबत्ता	तुम ने जान लिया	जिन्होंने ने	ज़ियादती की	तुम से	हफ़ते के दिन में
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا					
तुम हो जाओ	बन्दर	ज़लील	65	फिर हम ने उसे बनाया	इब्रत
وَمَا خَلَفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ					
और जो	उस के पीछे	और नसीहत	परहेज़गारों के लिए	66	और जब
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقْرَةً ۚ قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۚ					
वेशक	अल्लाह	तुम्हें हुक्म देता है	कि	तुम जुब्ह करो	एक गाय
قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا					
उस ने कहा	मैं पनाह लेता हूँ	अल्लाह की	कि हो जाऊँ	जाहिलों से	67
رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ					
अपना रब	वतलाए	हमें	कैसी है वह	उस ने कहा	वेशक वह
لَّا فَارِضٌ وَلَا بَكْرٌ ۚ عَوَانٌ بَيْنَ ذَلِكَ ۚ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾					
न बूढ़ी	और न	छोटी उम्र	जवान	दरमियान	उस
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا لَوْئُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ					
उन्होंने ने कहा	दुआ करें	हमारे लिए	हमारे रब	अपना रब	वह वतलादे
إِنَّهَا بَقْرَةٌ ۖ صَفْرَاءُ ۖ فَاقْعُ لَوْنُهَا ۚ تَسْرُ النَّظِيرِينَ ﴿٦٩﴾					
कि वह	एक गाय	ज़र्द रंग	गहरा	उस का रंग	अच्छी लगती

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और सावी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आखिरत पर और नेक अमल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई खौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इकरार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता तुम पर, और उस की रहमत तो तुम नुक़सान उठाने वालों में से थे (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्होंने ने तुम में से हफ़ते के दिन में ज़ियादती की तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इब्रत बनाया, और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा वेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय जुब्ह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्होंने ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा वेशक वह फ़र्माता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्होंने ने कहा हमारे लिए दुआ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा वेशक वह फ़र्माता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग खूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)



उन्होंने ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इशतिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फर्माता है कि वह एक गाए है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, वे ऐव है, उस में कोई दाग नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्होंने ने उसे जुव्ह किया, और वह लगते न थे कि वह (जुव्ह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़तल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मकतूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दा को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपने निशान, ताकि तुम गौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए, या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तबक्को रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी खातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं, तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا ۚ										
हम पर	इशतिबाह हो गया	गाय	क्योंकि	वह कैसी	हमें	वह बतला दे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	उन्होंने ने कहा
وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ										
एक गाए	कि वह	फर्माता है	बेशक वह	उस ने कहा	70	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	अल्लाह	चाहा	अगर	और बेशक हम
لَا ذُلُّ لَهَا تُشِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا ۚ										
उस में	कोई दाग	नहीं	वे ऐव	खेती	पानी देती	और न	ज़मीन	जोतती	न सधी हुई	
قَالُوا ائِنَّ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبْحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾										
71	वह करें	और वह लगते न थे	फिर उन्होंने ने जुव्ह किया उस को	ठीक बात	तुम लाए	अब	वह बोले			
وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَرَأْتُمُ فِيهَا ۚ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ										
जो तुम थे	ज़ाहिर करने वाला	और अल्लाह	उस में	फिर तुम झगड़ने लगे	एक आदमी	तुम ने क़तल किया	और जब			
تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ										
मुर्दे	अल्लाह	ज़िन्दा करेगा	इस तरह	उस का टुकड़ा	उसे मारो	फिर हम ने कहा	72	छुपाते		
وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ										
बाद	तुम्हारे दिल	सख़्त हो गए	फिर	73	गौर करो	ताकि तुम	अपने निशान	और तुम्हें दिखाता है		
ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ										
पत्थर	से	और बेशक	सख़्त	उस से ज़ियादा	या	पत्थर जैसे	सो वह	उस		
لَمَّا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَشَقُّ فَيَخْرُجُ مِنْهُ										
उस से	तो निकलता है	फट जाते हैं	अलबत्ता जो	उस से (बाज़)	और बेशक	नहरें	उस से	फूट निकलती है	अलबत्ता	
الْمَاءِ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَهِيْطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ										
बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह	डर	से	अलबत्ता गिरता है	उस से	और बेशक	पानी		
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾ أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ										
और था	तुम्हारे लिए	मान लेंगे	कि	क्या फिर तुम तबक्को रखते हो	74	तुम करते हो	से जो			
فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ										
बाद	वह बदल डालते हैं उस को	फिर	अल्लाह का कलाम	वह सुनते हैं	उन से	एक फ़रीक़				
مَا عَقْلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا										
वह कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	वह मिलते हैं	और जब	75	जानते हैं	और वह	जो उन्होंने ने समझ लिया		
آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا										
जो	क्या बतलाते हो उन्हें	कहते हैं	बाज़	पास	उन के बाज़	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए		
فَتَحِ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾										
76	तो क्या तुम नहीं समझते	तुम्हारा रब	सामने	उस के ज़रीए	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	तुम पर	अल्लाह	ज़ाहिर किया		



أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ (٧٧)							
क्या नहीं	वह जानते	कि	अल्लाह	जानता है	जो वह छुपाते हैं	और जो	वह ज़ाहिर करते हैं
وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ (٧٨)							
और उन में	अनपढ़	वह नहीं जानते	किताब	सिवाए	आजूब	और नहीं	मगर वह
गुमान से काम लेते हैं	78	सो खराबी	उन के लिए जो	लिखते हैं	किताब	अपने हाथों से	फिर
يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لَئِيشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ							
वह कहते हैं	यह	से	पास	अल्लाह	ताकि वह हासिल करें	उस से	कीमत थोड़ी
उन के लिए	उस से जो	लिखा	उन के हाथ	और खराबी	उन के लिए	उस से जो	वह कमाते हैं
79	और उन्होंने ने कहा	لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ (٧٩)					
उन के लिए	उस से जो	लिखा	उन के हाथ	और खराबी	उन के लिए	उस से जो	वह कमाते हैं
لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً ۖ قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ							
हरगिज़ नहीं छुएगी	आग	सिवाए	दिन	चन्द	कह दो	क्या तुम ने लिया	पास
कोई वादा	कि	हरगिज़ न	खिलाफ करेगा	अल्लाह	अपना वादा	क्या	तुम कहते हो
عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۚ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا							
वह नहीं जानते	80	क्यों नहीं	जिस ने	कमाई	कोई बुराई	और घर लिया	उस को
تَعْلَمُونَ (٨٠) بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ							
उस की ख़ताएँ	उस को	और घर लिया	कोई बुराई	कमाई	कोई बुराई	और घर लिया	उस को
فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (٨١) وَالَّذِينَ							
पस यही लोग	आग वाले (दोज़खी)	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	81	और जो लोग	
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ							
इमान लाए	और उन्होंने ने किए	अच्छे अमल	यही लोग	जन्नत वाले	वह		
فِيهَا خَالِدُونَ (٨٢) وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ							
उस में	हमेशा रहेंगे	82	और जब	हम ने लिया	पुख्ता अहद	बनी इस्राईल	
لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۚ تَفَٰ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَذِي الْقُرْبَىٰ							
तुम इबादत न करना	सिवाए अल्लाह	और माँ बाप से	और माँ बाप से	हुस्ने सुलूक	और क़राबतदार		
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ ۖ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا							
और यतीम (जमा)	और मस्कीन (जमा)	और तुम कहना	लोगों से	अच्छी बात			
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ ثُمَّ							
और तुम काइम करना	नमाज़	और देना	ज़कात	फिर			
تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ (٨٣)							
तुम फिर गए	सिवाए	चन्द एक	तुम में से	और तुम	फिर जाने वाले	83	

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आज़ूबों के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए खराबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी कीमत, सो उन के लिए खराबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए खराबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्होंने ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा, क्या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की ख़ताओं ने घर लिया पस यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग इमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए यही लोग जन्नत वाले हैं वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख्ता अहद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और क़राबतदारों, यतीमों और मस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ काइम करना, और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

और फिर जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया कि तुम अपनों के खून न बहाओगे, और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इकरार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो क़त्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के बतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास कैदी आएँ तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो? और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए उस के कि दुन्या की ज़िन्दगी में रुसवाई, और वह क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्होंने ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी, सो उन से अज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के बाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियाँ दी और उस की मदद की जिब्राईल के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकव्वुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे। (87)

और उन्होंने ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ						
और जब	हम ने लिया	तुम से पुख्ता अहद	न तुम बहाओगे	अपनों के खून	और न	तुम निकालोगे
أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَسْهَدُونَ (84)						
अपनों	से	अपनी बस्तियां	फिर	तुम ने इकरार किया	और तुम	गवाह हो
84						
ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ						
फिर	तुम	वह लोग	क़त्ल करते हो	अपनों को	और तुम निकालते हो	अपने से एक फ़रीक़
مِنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْغَدْوَانِ وَإِنْ						
से	उन के बतन	तुम चढ़ाई करते हो	उन पर	गुनाह से	और सरकशी	और अगर
يَأْتُوَكُمْ أَسْرَى تَفْدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ						
वह आएँ तुम्हारे पास	कैदी	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	हालांकि वह	हराम किया गया	तुम पर	निकालना उन का
أَفْتَوْمُنُونَ بَعْضُ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ						
तो क्या तुम ईमान लाते हो	बाज़ हिस्से	किताब	और इन्कार करते हो	बाज़ हिस्से	सो क्या	सज़ा
مَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا						
जो	करे	यह	तुम में से	सिवाए	रुसवाई	दुन्या
وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا						
और क़ियामत के दिन	वह लौटाए जाएंगे	तरफ़	सख़्त अज़ाब	और नहीं	अल्लाह	बेख़बर
उस से जो						
تَعْمَلُونَ (85) أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ						
तम करते हो	85	यही लोग	वह जिन्होंने ने	ख़रीद ली	ज़िन्दगी	दुन्या
आख़िरत के बदले						
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (86)						
सो हलका न किया जाएगा	उन से	अज़ाब	और न	वह	मदद किए जाएंगे	86
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ						
और अलबत्ता हम ने दी	मूसा	किताब	और हम ने पै दर पै भेजे	उस के बाद	रसूल	
وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ						
और हम ने दी	ईसा (अ)	मरयम का बेटा	खुली निशानियाँ	और उस की मदद की	जिब्राईल के ज़रीए	
أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ						
क्या फिर जब	आया तुम्हारे पास	कोई रसूल	उस के साथ जो	न चाहते	तुम्हारे नफ़्स	तुम ने तकव्वुर किया
فَفَرِّقُوا كَذِبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ (87) وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ						
सो एक गिरोह	तुम ने झुटलाया	और एक गिरोह	तुम क़त्ल करने लगे	87	और उन्होंने ने कहा	हमारे दिल
पर्दे में						
بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ (88)						
बल्कि	उन पर लानत	अल्लाह	उन के कुफ़्र के सबब	सो थोड़े	जो ईमान लाते हैं	88

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۖ								
और जब	उन के पास आई	किताब	से	पास	अल्लाह	तसदीक करने वाली	उस की जो	उन के पास
وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا								
और वह थे	उस से पहले	फतह मांगते	पर	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	सो	जब		
جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۖ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾								
आया उन के पास	जो	वह पहचानते थे	उस के मुन्किर हो गए	सो लानत	अल्लाह	पर	काफ़िर (जमा)	89
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا								
बुरा है जो	वेच डाला उन्होंने ने	उस के बदले	अपने आप	कि	वह मुन्किर हुए	उस से जो	नाज़िल किया	अल्लाह
أَنْ يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ								
कि	नाज़िल करता है	अल्लाह	से	अपना फ़ज़ल	पर	जो वह चाहता है	से	अपने बन्दे
فَبَاءَوْا بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ								
सो वह कमा लाए	ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	और काफ़िरों के लिए	अज़ाब			
مُهِينٌ ﴿٩٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا								
रुसवा करने वाला	90	और जब कहा जाता है	उन्हें	तुम ईमान लाओ	उस पर जो	नाज़िल किया अल्लाह ने	वह कहते हैं	
نُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ								
हम ईमान लाते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया	हम पर	और इन्कार करते हैं	उस से जो	उस के अलावा	हालांकि वह	हक
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۚ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ								
तसदीक करने वाला	उस की जो	उन के पास	कह दें	सो क्यों	तुम क़त्ल करते रहे	अल्लाह के नबी (जमा)		
مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ								
उस से पहले	अगर	तुम हो	मोमिन (जमा)	91	और अलवत्ता	तुम्हारे पास आए		
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ								
मूसा	खुली निशानियों के साथ	फिर	तुम ने बना लिया	बछड़ा	उस के बाद	और तुम		
ظُلُمُونَ ﴿٩٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ								
ज़ालिम (जमा)	92	और जब	हम ने लिया	तुम से पुख्ता अहद	और हम ने बुलन्द किया	तुम्हारे ऊपर	कोहे तूर	
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمِعُوا ۚ قَالُوا سَمِعْنَا								
पकड़ो	जो हम ने दिया तुम्हें	मज़बूती से	और सुनो	वह बोले	हम ने सुना			
وَعَصَيْنَا ۚ وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ								
और नाफ़रमानी की	और रचा दिया गया	में	उन के दिल	बछड़ा	वसवव उन के कुफ़्र			
قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾								
कह दें	क्या ही बुरा जो	तुम्हें हुक्म देता है	उस का	ईमान तुम्हारा	अगर तुम हो	मोमिन	93	

और जब उन के पास अल्लाह के पास से किताब आई, उस की तसदीक करने वाली, जो उन के पास है और वह उस से पहले काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत है। (89)

बुरा है जो उन्होंने ने वेच डाला अपने आप को उस के बदले कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया, इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़ल से, अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अलावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तसदीक करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को उस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलवत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आखिरत का घर अल्लाह के पास खास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्जू करो, अगर तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्जू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (95)

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुश्रिकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हजार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो जिब्राईल का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुक्म से उस की तसदीक करने वाला जो उस से पहले है, और हिदायत और खुशखबरी ईमान वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का, और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का, और जिब्राईल और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। (98)

और अलबत्ता हम ने आप की तरफ़ वाज़ेह निशानियाँ उतारी और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्होंने ने कोई अहद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तसदीक करने वाला जो उन के पास है, तो फ़ैक़ दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। (101)

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً						
कह दें	अगर है	तुम्हारे लिए	आखिरत का घर	पास	अल्लाह	खास तौर पर
مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّوا أَلْمُوتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (94)						
सिवाए	लोग	तो तुम आर्जू करो	मौत	अगर	तुम हो	सच्चे
وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْتُ أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ						
और वह हरगिज़ उस की आर्जू न करेंगे	कभी	वसबव जो आगे भेजा	उन के हाथ	और अल्लाह	जानने वाला	
بِالظَّالِمِينَ (95) وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَوٰةٍ						
ज़ालिमों को	95	और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें	ज़ियादा हरीस	लोग	ज़िन्दगी पर	
وَمِنَ الَّذِينَ اشْرَكُوا يَوْمَ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ						
और से	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	चाहता है	उन का हर एक	काश वह उम्र पाए	हज़ार	साल
وَمَا هُوَ بِمُزَحَّزَجِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ						
और वह नहीं	उसे दूर करने वाला	से	अज़ाब	कि वह उम्र दिया जाए	और अल्लाह	देखने वाला
يَعْمَلُونَ (96) قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ						
वह करते हैं	96	कह दें	जो	हो	दुश्मन	जिब्राईल का
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى						
तेरे दिल पर	हुक्म से	अल्लाह	तसदीक करने वाला	उस की जो	उस से पहले	और हिदायत
وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ (97) مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ						
और खुशखबरी	ईमान वालों के लिए	97	जो	हो	दुश्मन	अल्लाह का
وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ (98)						
और उस के रसूल	और जिब्राईल	और मिकाईल	तो बेशक अल्लाह	दुश्मन	काफ़िरों का	98
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا						
और अलबत्ता	हम ने उतारी	आप की तरफ़	निशानियाँ वाज़ेह	और नहीं इन्कार करते	उस का	
إِلَّا الْفَاسِقُونَ (99) أَوْ كَلَّمَا عَهْدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ						
मगर	नाफ़रमान	99	क्या जब भी	उन्होंने ने अहद किया	कोई अहद	तोड़ दिया उस को
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (100) وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ						
बल्कि	अक्सर उन के	ईमान नहीं रखते	100	और जब	आया उन के पास	एक रसूल
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ						
तसदीक करने वाला	उस की जो	उन के पास	फ़ैक़ दिया	एक फ़रीक़	से	जिन्हें
كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (101)						
अल्लाह की किताब	पीछे	अपनी पीठ	गोया कि वह	जानते नहीं	101	

مَعْلُومَةٌ ٢ عِنْدَ النَّاسِ ٣

١١

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمَنَ ۖ وَمَا كَفَرَ							
और उन्होंने ने पैरवी की	जो	पढ़ते थे	शैतान	में	बादशाहत	सुलेमान (अ)	और कुफ़ न किया
سُلَيْمَنَ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ ۚ							
सुलेमान (अ)	लेकिन	शैतान (जमा)	कुफ़ किया	वह सिखाते	लोग	जादू	
وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ الْمَلَائِكَةِ بِبَابِلَ ۖ هَازُوتَ وَمَأْرُوتَ ۚ							
और जो नाज़िल किया गया	पर	दो फ़रिश्ते	बाबिल में	हास्त	और मारुत		
وَمَا يُعَلِّمَنِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۚ							
और वह न सिखाते	किसी को	यहां तक	वह कह देते	सिर्फ	हम	आज़माइश	पस तू कुफ़ न कर
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ							
सो वह सीखते	उन दोनों से	जिस से जुदाई डालते	उस से	दरमियान	खाविन्द	और उस की वीवी	
وَمَا هُمْ بِضَارِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ							
और वह नहीं	नुक्सान पहुँचाने वाले	उस से	किसी को	मगर	हुकम से	अल्लाह	
وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا							
और वह सीखते हैं	जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए	और न	उन्हें नफ़ा दे	और वह जान चुके			
لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۚ وَلَبَسَ							
जिस ने	यह ख़रीदा	नहीं उस के लिए	आखिरत में	कोई हिस्सा	और अलवत्ता बुरा		
مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ							
जो उन्होंने ने बेच दिया	उस से	अपने आप को	काश	वह जानते होते	102	और अगर	वह
آمَنُوا وَاتَّقُوا لِمَنْ تَبَوَّءُوا مِنَ اللَّهِ خَيْرٌ ۚ							
वह ईमान लाते	और परहेज़गार बन जाते	तो ठिकाना पाते	से	पास	अल्लाह	बेहतर	
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا							
काश वह जानते होते	103	ऐ	वह लोग जो	ईमान लाए	न कहो	राइना	
وَقُولُوا أَنْظِرْنَا وَاسْمِعُوا ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾							
और कहो	उनजूरना	और सुनो	और काफ़िरों के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	104	
مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ							
नहीं चाहते	जिन लोगों ने	कुफ़ किया	से	अहले किताब	और न	मुश्रिक (जमा)	
أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْكَ مِنْ خَيْرٍ مِّنْ رَبِّكَ ۚ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ							
कि	नाज़िल की जाए	तुम पर	से	भलाई	से	तुम्हारा रब	और अल्लाह
بِرَحْمَتِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾							
अपनी रहमत से	जिसे चाहता है	और अल्लाह	फज़ल वाला	बड़ा	105		

और उन्होंने ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़ नहीं किया सुलेमान (अ) ने, लेकिन शैतानों ने कुफ़ किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हास्त और मारुत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को, यहां तक कि कह देते कि हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़ न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से खाविन्द और उस की वीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को, मगर अल्लाह के हुकम से, और वह सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे और अलवत्ता वह जान चुके हैं जिस ने यह ख़रीदा, उस के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलवत्ता बुरा है जिस के बदले उन्होंने ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। (102)

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। (103)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! राइना न कहो और उनजूरना कहो और सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से खास कर लेता है और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (105)



कोई आयत जिसे हम मनसूख करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता? कि अल्लाह हर शै पर कादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए उस से पहले मूसा से, और जो ईमान के बदले कुफ़ इख़्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़ में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम मुआफ़ कर दो और दरगुज़र करो, यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (109)

और नमाज़ काइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्होंने ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में, सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्जूएँ हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील, अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चहरा अल्लाह के लिए झुका दिया, और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई खौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۝													
जो हम मनसूख करते हैं		कोई आयत		या उसे भुला देते हैं		ले आते हैं		बेहतर		उस से		या उस जैसा	
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ													
क्या नहीं		तू जानता		कि अल्लाह		पर		हर शै		कादिर		106 क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह उस के लिए	
مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُمْ لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ													
बादशाहत		आस्मानों		और ज़मीन		और नहीं		तुम्हारे लिए		से		अल्लाह के सिवा कोई	
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا													
हामी		और न मददगार		107 क्या तुम चाहते हो		कि		सवाल करो		अपना रसूल		जैसे	
سُئِلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ													
सवाल किए गए		मूसा		उस से पहले		और जो		इख़्तियार कर ले		कुफ़		ईमान के बदले	
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ													
सो वह भटक गया		सीधा		रास्ता		108 चाहा		बहुत		से		अहले किताब	
لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ													
काश तुम्हें लौटा दें		से		बाद		तुम्हारे ईमान		कुफ़ में		हसद		वजह से	
أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا													
अपने दिल		बाद		जब कि		वाज़ेह हो गया		उन पर		हक़		पस तुम मुआफ़ कर दो	
وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ													
और दरगुज़र करो		यहां तक		लाए		अल्लाह		अपना हुक्म		बेशक		अल्लाह पर हर चीज़	
قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ وَمَا تُقَدِّمُوا													
कादिर		109 और तुम काइम करो		नमाज़		और देते रहो		ज़कात		और जो		आगे भेजोगे	
لَا أَنْفُسَكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ													
अपने लिए		भलाई		तुम पा लोगे उसे		अल्लाह के पास		बेशक		अल्लाह		जो कुछ तुम करते हो	
بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا													
देखने वाला		110 और उन्होंने ने कहा		हरगिज़ दाख़िल न होगा		जन्नत		सिवाए		जो		हो यहूदी	
أَوْ نَصْرَىٰ ۚ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ													
या नसरानी		यह		झूटी आर्जूएँ		कह दीजिए		तुम लाओ		अपनी दलील		अगर तुम हो	
صَدِيقِينَ ﴿١١١﴾ بَلَىٰ ۚ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ													
सच्चे		111 क्यों नहीं		जिस		झुका दिया		अपना चहरा		अल्लाह के लिए		और वह नेकोकार तो उस के लिए	
أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾													
उस का अजर		पास		उस का रब		और न		कोई खौफ़		उन पर		और न वह ग़मगीन होंगे 112	

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَى عَلَى شَيْءٍ ۖ وَقَالَتِ النَّصْرَى							
और कहा	यहूद	नहीं	नसारा	पर	किसी चीज़	और कहा	नसारा
لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ							
नहीं	यहूद	किसी चीज़ पर	हालांकि वह	पढ़ते हैं	किताब	इसी तरह	कहा
لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
इल्म नहीं रखते	जैसी	उन की बात	सो अल्लाह	फैसला करेगा उन के दरमियान	क्रियामत के दिन		
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ							
जिस में	वह थे	उस में	इख़तिलाफ़ करते	113	और कौन	बड़ा ज़ालिम	से-जो
مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذَكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ							
अल्लाह की मसजिदें	कि	ज़िक्र किया जाए	उस में	उस का नाम	और कोशिश की	में	उस की वीरानी
أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا							
यह लोग	न था	उन के लिए	कि	वहां दाख़िल होते	मगर	डरते हुए	उन के लिए
خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ							
रुसवाई	और उन के लिए	आख़िरत में	अज़ाब	बड़ा	114	और अल्लाह के लिए	मशरूक और मग़रिब
فَإِنَّمَا تُولَّوْا فَتَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾							
सो जिस तरह	तुम मुँह करो	तो उस तरफ़	अल्लाह का सामना	वेशक	अल्लाह	बुसअत वाला	जानने वाला है
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ							
और उन्होंने ने कहा	बना लिया	अल्लाह	बेटा	वह पाक है	बल्कि उस के लिए	जो	आस्मानों में
وَالْأَرْضِ ۚ كُلُّ لَّهُ فَنِشَوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ							
और ज़मीन	सब	उस के लिए	ज़ेरे फ़र्मान	116	पैदा करने वाला	आस्मानों	और ज़मीन
وَإِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ							
और जब	वह फैसला करता है	कोई काम	तो यही	कहता है	उसे	“हो जा”	तो वह हो जाता है
لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۚ كَذَلِكَ							
इल्म नहीं रखते	क्यों नहीं	हम से कलाम करता	अल्लाह	या	हमारे पास आती	कोई निशानी	इसी तरह
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ							
कहा	जो लोग	उन से पहले	जैसी	उन की बात	एक जैसे हो गए	उन के दिल	
قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ							
हम ने वाज़ेह कर दी	निशानियां	लोगों के लिए	यकीन रखते हैं	118	वेशक हम	आप को भेजा	हक के साथ
بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾							
खुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला	और न आप से पूछा जाएगा	से	दोज़ख़ वाले	119		

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन? जिस ने अल्लाह की मसजिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाखिल होते, मगर डरते हुए, उन के लिए दुन्या में रुसवाई है और उन के लिए आखिरत में बड़ा अज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मशरूक और मग़रिब, सो जिस तरह तुम मुँह करो उसी तरह अल्लाह का सामना है, वेशक अल्लाह बुसअत वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़र्मान हैं। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है “हो जा” तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता? या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह उन से पहले लोगों ने उन जैसी बात कही उन के दिल एक जैसे हैं। हम ने यकीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

वेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, खुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! वेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं, और न मददगार। (120)

हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक़ है, वही उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121) ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख्स बदला न हो सकेगा किसी शख्स का कुछ भी, और न उस से कोई मुआवज़ा कुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)

और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्होंने न वह पूरी कर दी, उस ने फ़र्माया वेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़र्माया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)

और जब मैं नें ख़ाने काज़वा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज़तिमाज़) की जगह और अमन की जगह, और “मुक़ामे इब्राहीम” को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक़म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ़ सिज्द: करने वालों के लिए। (125)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को बना अमन वाला, और इस शहर के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़र्माया जिस ने कुफ़्र किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर कहूँगा दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصْرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ							
और हरगिज़ राज़ी न होंगे	आप से	यहूदी	और न	नसारा	जब तक	आप पैरवी करें	उन का दीन
قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنَّ آتِبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي							
कह दें	वेशक	हिदायत	अल्लाह	वही	हिदायत	और अगर	वह जो कि (जबकि)
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۖ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۚ							
आप के पास आया	से	इल्म	आप के लिए	अल्लाह से	कोई	हिमायत करने वाला	मददगार
الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَسْلُونَهُ ۚ حَقُّ تِلَاوَتِهِ ۖ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ							
जिन्हें	हम ने दी	किताब	उस की तिलावत करते हैं	हक़	उस की तिलावत	वही लोग	ईमान रखते हैं उस पर
وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۚ							
और जो	इन्कार करें उस का	वही	वह	ख़सारह पाने वाले	ऐ बनी इस्राईल	तुम याद करो	
نِعْمَتِي الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ							
मेरी नेमत	जो कि	मैं ने इन्आम की	तुम पर	और यह कि मैं ने	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	पर	ज़माने वाले
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا							
और डरो	वह दिन	बदला न होगा	कोई शख्स	किसी शख्स से	कुछ	और न कुबूल किया जाएगा	उस से
عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ							
कोई मुआवज़ा	और न	उसे नफ़ा देगी	कोई सिफ़ारिश	और न	उन	मदद की जाएगी	आज़माया
إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ۗ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۗ قَالَ							
इब्राहीम (अ)	उन का रब	चन्द बातों से	तो वह पूरी कर दी	उस ने फ़र्माया	वेशक मैं	तुम्हें बनाने वाला हूँ	लोगों का इमाम
وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۗ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ۚ							
और मेरी औलाद	उस ने फ़र्माया	नहीं पहुँचता	मेरा अ़हद	ज़ालिम (जमा)	124	और जब	बनाया हम ने
مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۗ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ							
इज़तिमाज़ की जगह	लोगों के लिए	और अमन की जगह	और तुम बनाओ	से	“मुक़ाम इब्राहीम”	नमाज़ की जगह	और हम ने हुक़म दिया
إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَأَسْمِعِلْ أَنْ طَهَّرَا بَيْتِي لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ ۖ							
इब्राहीम (अ) को	इस्माईल (अ) को	कि वह	पाक रखें	मेरा घर	तवाफ़ करने वालों के लिए	और एतिकाफ़ करने वाले	और रुकूअ़ करने वाले
السُّجُودِ ۚ							
सिज्द: करने वाले	125	और जब	कहा	इब्राहीम (अ)	ऐ मेरे रब	बना	यह शहर
أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ قَالَ وَمَنْ							
इस के रहने वाले	से	फल (जमा)	जो	ईमान लाए	उन से	अल्लाह पर	और आख़िरत का दिन
كَفَرَ فَأَمْطَعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَصْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۚ							
उस ने कुफ़्र किया	उसे नफ़ा दूँगा	थोड़ा	फिर	मजबूर कहूँगा उस को	तरफ़	दोज़ख़ का अज़ाब	लौटने की जगह

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ								
और	उठाते थे	इब्राहीम (अ)	बुन्यादें	से	खाने	और	ऐ हमारे	कुबूल फर्मा ले हम से
إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ								
वेशक तू	तू	सुनने वाला	जानने वाला	127	ऐ हमारे रब	और हमें बना ले	फर्मावरदार	अपना
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَإِنَّا مِنَّا سَكَنًا وَتُبَّ عَلَيْنَا ۖ								
और से	हमारी औलाद	उम्मत	फर्मावरदार	अपनी	और हमें दिखा	हज के तरीके	और हमारी तौबा कुबूल फर्मा	
إِنَّكَ أَنْتَ الثَّوَابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا								
वेशक	तू	तौबा कुबूल करने वाला	रहम करने वाला	128	ऐ हमारे रब	और भेज	उन में	एक रसूल
مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ								
उन से	वह पढ़े	उन पर	तेरी आयतें	और उन्हें तालीम दे	“किताब”	और हिक्मत (दानाई)		
وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبْ عَنْ مِّلَّةِ								
और उन्हें पाक करे	वेशक तू	ग़ालिब	हिक्मत वाला	129	और कौन	मुँह मोड़े	से	दीन
إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ								
इब्राहीम (अ)	सिवाए	जिस ने	वेवकूफ बनाया	अपने आप	और वेशक	हम ने उसे चुन लिया	दुनिया में	
وَأَنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٣٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ ۖ								
और वेशक वह	आखिरत में	से	नेकोकार (जमा)	130	जब कहा	उस को	उस का रब	सर झुका दे
قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣١﴾ وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ								
उस ने कहा	मैं ने सर झुका दिया	रब के लिए	तमाम जहान	131	और वसीयत की	उस की	इब्राहीम (अ)	अपने बेटे
وَيَعْقُوبُ ۚ يَبْنِيَنَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا								
और याकूब (अ)	मेरे बेटों	वेशक अल्लाह	चुन लिया	तुम्हारे लिए	दीन	पस तुम हरगिज़ न मरना	मगर	
وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۖ								
और तुम	मुसलमान (जमा)	132	क्या तुम थे	मौजूद	जब	आई	याकूब (अ)	मौत
إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي ۚ قَالُوا نَعْبُدُ								
जब उस ने कहा	अपने बेटों को	किस की तुम इबादत करोगे?	मेरे बाद	उन्होंने ने कहा	हम इबादत करेंगे			
الْهَكَ وَالْهَ أَبَاكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۖ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۚ								
तेरा माबूद	और माबूद	तेरे बाप दादा	इब्राहीम (अ)	और इस्माईल (अ)	और इसहाक (अ)	माबूद	वाहिद	
وَنَحْنُ لَهُ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ								
और हम	उसी के	फर्मावरदार	यह	133	एक उम्मत	गुज़र गई	उस के लिए	जो उस ने कमाया
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾								
और तुम्हारे लिए	जो तुम ने कमाया	और तुम से न पूछा जाएगा	उस के बारे में	जो वह करते थे	134			

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) खाने काबूबा की बुन्यादें (यह दुआ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फर्मा ले, वेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फर्मावरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फर्मावरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीके दिखा, और हमारी तौबा कुबूल फर्मा, वेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें “किताब” और “हिक्मत” (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, वेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को वेवकूफ बनाया, और वेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याकूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटों! अल्लाह ने वेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद? जब याकूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहा मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्होंने ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इसहाक (अ) के माबूद वाहिद की, और हम उसी के फर्मावरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)



और उन्होंने ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुशरिकों में से न थे। (135)

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इसहाक (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को, उन के रब की तरफ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फर्क नहीं करते, और हम उसी के फर्मावरदार हैं। (136)

पस अगर वह ईमान ले आएँ जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो, तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्होंने ने मुँह फेरा तो वेशक वही ज़िद में हैं, पस अ़नक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (137)

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (138)

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में, हालाँकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अ़मल और तम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, और हम ख़ालिस उसी के हैं, (139)

क्या तुम कहते हो? कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इसहाक (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ से उस के पास थी, और अल्लाह देखवर नहीं उस से जो तुम करते हो। (140)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिए है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (141)

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصْرَى تَهْتَدُوا ۖ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ								
इब्राहीम (अ)	बल्कि दीन	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नसरानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्होंने ने कहा
حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُسْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوا آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ								
नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दो	135	मुशरिकीन	से	और न थे
إِلَيْنَا ۚ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا ۖ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ								
और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ	
وَالْأَسْبَاطِ ۚ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ								
उन के रब से	नबियों	दिया गया	और जो	और ईसा (अ)	मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलादे याकूब (अ)
لَا نَفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ فَإِنْ								
पस अगर	136	फर्मावरदार	उसी के	और हम	उन से	किसी एक	दरमियान	हम फर्क नहीं करते
أَمِنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا								
तो वेशक वही	उन्होंने ने मुँह फेरा	और अगर	तो वह हिदायत पा गए	उस पर	तुम ईमान लाए	जैसे	वह ईमान लाए	
هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾								
137	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	अल्लाह	पस अ़नक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा	ज़िद	में	वह
صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۚ وَنَحْنُ لَهُ								
उसी की	और हम	रंग	अल्लाह	से	अच्छा	और किस	रंग अल्लाह का	
عِبْدُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اتَّحَاجُّونَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَا								
और हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	हालाँकि वही	अल्लाह के बारे में	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	कह दीजिए	138	इबादत करने वाले
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ تَقُولُونَ								
तुम कहते हो	क्या	139	ख़ालिस	उसी के	और हम	तुम्हारे अ़मल	और तम्हारे लिए	हमारे अ़मल
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا								
थे	और औलादे याकूब (अ)	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	कि		
هُودًا أَوْ نَصْرَى ۚ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ								
बड़ा ज़ालिम	और कौन	या अल्लाह	ज़ियादा जानने वाले	क्या तुम	कह दीजिए	या नसरानी	यहूदी	
مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللّٰهِ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ								
वेखवर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह से	उस के पास	गवाही	छुपाई	से-जिस		
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ								
उस ने कमाया	जो	उस के लिए	गुज़र चुकी	एक उम्मत	यह	140	तुम करते हो	उस से जो
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾								
141	वह करते थे	उस से जो	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए			